हम दुर्बल नहीं, शक्तिशाली बनें

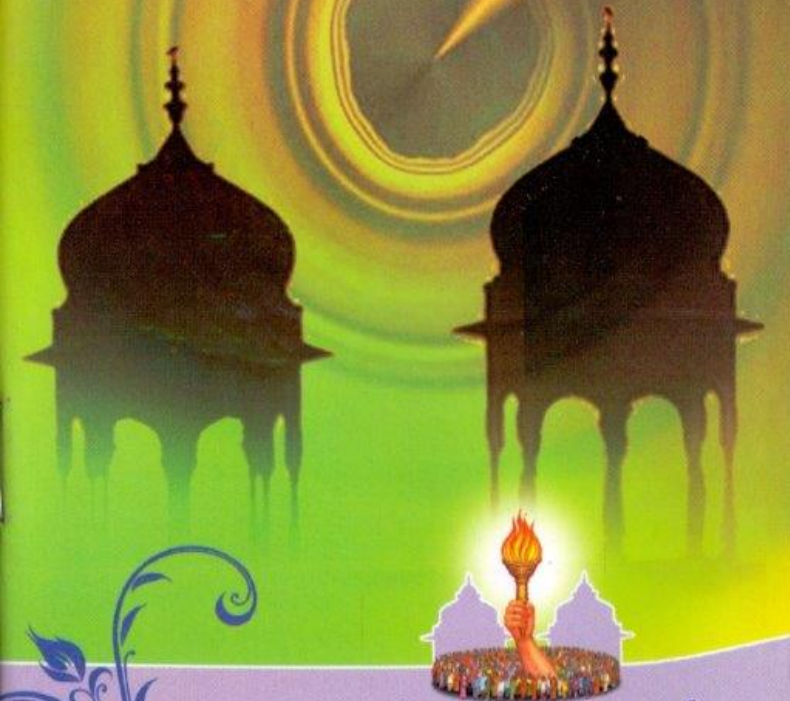

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

हम दुर्बल नहीं, शक्तिशाली बनें

लेखक

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. : ०९९२७०८६२८९, ०९९२७०८६२८७

फैक्स २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१४ मूल्य : ६.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at

www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकाशक
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि
मथुरा (उ. प्र.)

लेखक
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

मुद्रक
युग निर्माण योजना प्रेस
गायत्री तपोभूमि, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हम दुर्बल नहीं, शक्तिशाली बनें

दुर्बलता के पाप से बचिए

संसार में अनेक दुष्कर्मों को पाप की संज्ञा दी जाती है। चोरी करना, हत्या, दुराचार, झूठ बोलना, धोखा देना, विश्वासघात करना, किसी को पीड़ा-नुकसान पहुँचाना आदि पापकर्म कहे जाते हैं। लेकिन एक और भी बड़ा पाप होता है, वह है कमजोर होना। दुर्बलता अपने आप में एक बहुत बड़ा पाप है। दुर्बलता किसी प्रकार की हो; चाहे शारीरिक हो, मानसिक या सामाजिक, मनुष्य के लिए अभिशाप है। क्योंकि दुर्बलता से अन्य पापों को प्रोत्साहन मिलता है। कमजोर आदमी ही पाप में जल्दी प्रवृत्त होता है।

कमजोरी का मोटा अर्थ शारीरिक दुर्बलता से ही लिया जाता है और यही अधिक हानिकारक है। स्वर्गीय लोकमान्य तिलक ने कहा था—"शरीर को रोगी और दुर्बल रखने के समान दूसरा कोई पाप नहीं है।" क्योंकि शरीर के दुर्बल होने पर मनुष्य का मस्तिष्क भी दुर्बल हो जाता है और दुर्बल मस्तिष्क बुराइयों के द्वारा जल्दी ही घसीट लिया जाता है। दुर्बल व्यक्ति ही संसार में बुराइयों को प्रोत्साहन देते हैं। दुःखों की जड़ दुर्बलता ही है। मिल्टन ने कहा है—"कमजोर होना ही दुखी होना है।" स्वामी विवेकानंद ने कहा है—"कमजोरी कभी न हटने वाला बोझ और यंत्रणा है, दुर्बलता का नाम ही मृत्यु है।" हमारे बहुत से दुःखों का कारण यह दुर्बलता ही है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संसार में अत्याचार, पीड़ा, जुल्म, बुराइयों की खुराक दुर्बलता है। मिल्टन ने कहा है—''सारी दुर्जनता दुर्बलता की ही देन है।'' विचार कीजिए, जिसमें कोई शक्ति नहीं है, जिसमें साहस नहीं, वह अपने या अपने पड़ोसी पर होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध कैसे आवाज उठा सकेगा? अत्याचार सहन करना, उसे समाज में होते देखना भी कम पाप नहीं है। इससे दूसरों को जुल्म करने का प्रोत्साहन मिलता है।

इस संघर्ष प्रधान संसार में ससम्मान जीवित रहने का हक उन्हीं को है जो शक्तिमान हैं। कहावत है—''दुनिया में कमजोरों को जीने का हक नहीं है।'' जो दुर्बल हैं, कमजोर हैं, उन्हें यह संसार अधिक दिन जीवित नहीं रहने देता। प्रकृति भी उनसे जीने का हक छीन लेती है।

संसार कर्मभूमि है और शक्तिमान ही कुछ कर सकता है। दुर्बल—क्षीणकाय व्यक्ति यहाँ क्या कर सकता है? वह तो उलटा दूसरों पर भार बनकर रहता है। इस तरह का परावलंबी-पराधीन जीवन अपने आप में एक अभिशाप है। जो व्यक्ति, जो समाज दुर्बल होता है उसे दूसरों के अत्याचार सहन करने पड़ते हैं, गुलामी का जीवन बिताना पड़ता है। अपनी स्वाधीनता की रक्षा वे ही लोग कर सकते हैं जो शक्तिशाली होते हैं। इसीलिए स्वतंत्रता की बात कहने से पहले स्वामी विवेकानंद ने भारतीयों को शक्तिशाली बनने के लिए—शक्ति की उपासना के लिए कहा था। उन्होंने बड़े ही मार्मिक शब्दों में भारतीयों की कमजोरी के बारे में कहा था—''हमारे शास्त्र कितने ही बड़े क्यों न हों, हमारे पूर्वज कितने ही महान क्यों न हों, लेकिन मैं आपसे स्पष्ट भाषा में कह देना चाहता हूँ कि हम बड़े दुर्बल हैं। प्रथमतः हम शरीर से दुर्बल हैं फिर मस्तिष्क से। हम एक साथ मिल नहीं सकते। एकदूसरे से प्रेम नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करते। हम तीन मनुष्य एकत्र हो एकदूसरे से घृणा करते हैं, ईर्ष्या करते हैं, लड़ते-झगड़ते हैं। हम बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, सोचते-विचारते हैं, लेकिन करते कुछ नहीं।''

लौकिक जीवन की भाँति ही आध्यात्मिक क्षेत्र में भी कमजोर व्यक्ति आगे नहीं बढ़ सकता। शास्त्रकार ने कहा है—'**नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः**' अर्थात बलहीन व्यक्ति आत्मवान नहीं बन सकता। महर्षि रमण से एक बार उनके एक अनन्य भक्त तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति ने ब्रह्म-दीक्षा के लिए कहा। लेकिन वे सज्जन रुग्ण थे। महर्षि ने कहा—''छिद्रयुक्त घड़े में पानी नहीं ठहर सकता।'' तात्पर्य था, रुग्ण शरीर आध्यात्मिक दीक्षा के लिए अयोग्य होता है।

खेद है लोग अपनी शारीरिक, मानसिक, सांसारिक शक्तियों को न बढ़ाकर प्रयत्न में ही अध्यात्मवादी बन जाना चाहते हैं। कैसी विडंबना है। इस भूल को बताते हुए स्वामी विवेकानंद ने कहा था—''सर्वप्रथम आपको बलवान बनना होगा, धर्म पीछे आएगा। तुम सभी भाँति बलवान बनो, यही मेरा उपदेश है तुम्हारे लिए। गीता-पाठ, नाम-जप करने की अपेक्षा तुम फुटबाल खेलने से स्वर्ग के अधिक समीप पहुँचोगे। बलवान शरीर, मजबूत पुट्ठों से तुम गीता को अधिक समझ सकोगे। शरीर में ताजा रक्त होने से तुम श्रीकृष्ण की महती प्रतिभा और तेजस्विता को अच्छी तरह समझ सकोगे। जिसका शरीर और मन रुग्ण है, दुर्बल है, वह आध्यात्मिक तेजस्विता को कैसे धारण कर सकेगा? कठोर साधनाएँ वह कैसे कर सकेगा? और तो और कमजोर की तो दैव भी सहायता नहीं करता। नीतिकार ने कहा है—'**देवोऽपि दुर्बल घातकः**' अर्थात कमजोर को तो देवता भी मारता है।

हमारे जीवन के अधिकांश क्लेश, दुःख, अशांति, पीड़ा, असफलताओं का मुख्य कारण हमारी दुर्बलता ही होती है। जबकि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हम इनके लिए दूसरों को कोसा करते हैं, भाग्य को दोष देते हैं। यह दुर्बलता की खास पहचान है। कमजोर व्यक्ति ही शिकायतें अधिक करता है काम कम। दुर्बलता ही अन्याय और अन्यायी को आकर्षित करती है। जहाँ शक्ति होती है, वहाँ ये तत्त्व ठहर भी नहीं सकते।

मुख्यतया दुर्बलता तीन प्रकार की होती है—शारीरिक, जिसके बारे में ऊपर लिखा जा चुका है। किसी भी तरह का रोग, शारीरिक असमर्थता पहली दुर्बलता है। फिर मानसिक दुर्बलता का नंबर आता है। स्वतंत्र विचार क्षमता का अभाव, ईर्ष्या-द्वेष, संकीर्णता, स्वार्थपरता आदि मानसिक कमजोरी के अंतर्गत आते हैं। ऐसी स्थिति में लोग सदैव किसी भी तथ्य के अशुभ पहलू पर ही अधिक ध्यान देते हैं। आलोचना, शिकायत, दुर्भावनाएँ कमजोर मन:स्थिति में ही उपजती हैं। दुर्बल मनोभूमि का व्यक्ति सुख-सुविधापूर्ण जीवन में भी दुखी और परेशान रहता है। अकारण ही भयभीत रहता है। ऐसे लोग कोई रचनात्मक, लाभप्रद कार्य नहीं कर पाते, उनकी शक्तियाँ सदैव रोने-झींकने में ही खरच हो जाती हैं। उन्हें संसार नारकीय यातनाओं का आगार जान पड़ता है।

मनुष्य की तीसरी दुर्बलता समाजगत होती है। इसमें भी दो मार्ग हैं—पहला सामूहिकता का अभाव, दूसरा जीवन-निर्वाह के साधनों में परावलंबन। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज के साथ रहकर ही वह उन्नति, आत्मरक्षा कर सकता है। इसलिए समाज का शक्तिशाली होना आवश्यक है और संगठन में ही समाज की शक्ति निर्भर करती है। जो मानव समुदाय संगठित न होगा, वह कमजोर होता जाएगा और यह कमजोरी उसके लिए पराधीनता, शोषण, अन्याय, उत्पीड़न आदि को सरलता से आमंत्रित कर लेती है। हम संगठित नहीं थे, इसलिए हम पर विदेशियों ने आक्रमण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किया, तरह-तरह के अत्याचार, अन्याय किए, सदियों हमें गुलामी के दिन बिताने पड़े। जब हम संगठित होकर खड़े हो गए तो इन समस्त जंजीरों को हमने जादू की तरह तोड़ फेंका। शक्तिशाली अँगरेज शासन को भारत छोड़ना पड़ा।

जीवन-निर्वाह के साधनों में मुख्य आर्थिक कमजोरी भी खासकर आज के अर्थ-प्रधान युग में महत्त्वपूर्ण है। आर्थिक दृष्टि से हीन मनुष्य भली प्रकार जीवन बिता सके, अपने उत्तरदायित्व और कर्त्तव्यों का वहन कर सके, यह असंभव है। भौतिक दृष्टि से भी मनुष्य को संपन्न होना आवश्यक है। अच्छी-अच्छी प्रतिभाएँ, पहलवानों जैसे शरीर, स्वस्थ मन भी आर्थिक समस्याओं में उलझकर, चिंता में पड़कर रुग्ण हो जाते हैं।

अपनी शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक कमजोरियों को दूर करने का पूरा-पूरा प्रयत्न कीजिए। स्मरण रखिए, दुर्बलता ही मृत्यु का दूसरा नाम है। शक्तिशाली बनिए, शक्ति ही जीवन का पर्याय है। अपने शरीर को, मन को शक्तिशाली बनाइए। जीवन-निर्वाह के साधन, उपकरण, पदार्थों में आत्मनिर्भर बनिए। भौतिक संपत्तियाँ बढ़ाइए। इस तरह का सर्वांगपूर्ण शक्तिसंपन्न जीवन ही सच्चे अर्थों में जीवन है।

हम शक्तिशाली भी तो बनें

जीवन और संसार की सतत क्रियाशीलता, कर्म की विभिन्न अभिव्यक्तियाँ, सृष्टि का समस्त कार्य-व्यापार 'शक्ति' के संस्पर्श से ही संचालित है। शक्ति के बिना संसार और जीवन की कल्पना तक भी नहीं की जा सकती। दूसरे शब्दों में शक्ति ही जीवन है। शक्ति का अभाव ही मृत्यु है। शक्ति का स्पर्श पाकर जड़-तत्त्व भी महत्त्वपूर्ण बन जाते हैं। निर्जीव कोयला अग्नि का तेजोमय रूप

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धारण कर लेता है। ग्रह-नक्षत्र सब अपनी-अपनी जगह पर आकाश में अधर लटकते हुए भी शक्ति के कारण ही स्थिर हैं। यदि शक्ति का असंतुलन पैदा हो जाए तो एकदूसरे से टकरा जाएँ। समस्त ब्रह्मांड ही नष्ट-भ्रष्ट हो जाए। शक्ति का सहारा लेकर जड़ वस्तुएँ भी गतिशील बन जाती हैं। चेतनशक्ति के कारण पंच-तत्त्व का बना मानव शरीर-यंत्र क्या-क्या गजब के काम कर दिखाता है। बिजली की शक्ति से लोहे, ताँबे के बने पंखे, मोटर, रेल, बल्ब आदि कितने महत्त्वपूर्ण कार्य संपन्न करते हैं? शक्ति असंभव को भी संभव कर देती है।

सामान्य से सामान्य प्रतिभा भी शक्ति का संस्पर्श प्राप्त करके असाधारण बन जाती है। प्रकृति के प्रत्येक स्पंदन में, संसार के प्रत्येक कार्य-व्यापार में, मानव-जीवन के हर एक स्वर में, शक्ति के बोल सुनाई पड़ते हैं। वृक्षों की हरियाली, उनका फूलना-फलना, वर्षा का होना, मेघों का गरजना, बिजली का चमकना, झरनों का कल-कल नाद, पक्षियों का कलरव, मनुष्य का प्रत्येक कार्य शक्ति का ही परिणाम है। शक्ति के अभाव में प्रकृतिनिर्मित मानव शरीर-यंत्र भी बेकार हो जाता है।

मानव जीवन में शक्ति एक नैतिक सद्गुण है, जिसे प्राप्त किया जा सकता है, बढ़ाया जा सकता है और उसके द्वारा महत्त्वपूर्ण कार्यों का संपादन भी किया जा सकता है। इसी तरह शक्ति नष्ट भी हो जाती है। वैसे शक्ति का कोई स्थूल रूप तो है नहीं, जो उसे पकड़ कर संग्रह कर लिया जाए। मूलभूत शक्तियाँ सूक्ष्म ही होती हैं, जिन्हें न देखा जा सकता है और न पकड़ा जा सकता है। विद्युत देखी नहीं जा सकती, किंतु बल्ब, पंखे एवं अन्य उपकरणों में उसका सक्रिय स्वरूप देखा जा सकता है। अभिव्यक्ति के माध्यम से कर्म के रूप में ही शक्ति का अस्तित्व प्रकाश में आता है। जहाँ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गति है, कर्मशीलता है, वहीं शक्ति का निवास है। मृतशरीर में कोई स्पंदन नहीं होता। अत: वहाँ पर शक्ति नहीं है।

शक्ति का स्रोत गतिशीलता, कर्म में से ही फूटकर निकलता है। अकर्मण्यता, जड़ता से शक्ति के स्रोत अवरुद्ध हो जाते हैं, मंद पड़ जाते हैं और एक दिन पूर्णत: बंद भी हो जाते हैं, किंतु कर्मरत मनुष्य नित्य नई शक्ति प्राप्त करता जाता है। उसके शक्ति-स्रोत अजस्र रूप से प्रवाहित होते रहते हैं। वह अपने बहुत से काम पूरे कर चुकता है, तब तक अमर्कण्य व्यक्ति अपनी कठिनाइयों की चर्चा करता हुआ पड़ा रहता है और कुछ नहीं कर पाता। अकर्मण्य के सोकर उठने से पूर्व ही कर्मवीर बहुत कुछ कर लेता है। उसकी शक्तियाँ अजस्र धारा की तरह नित्य-निरंतर बहती रहती हैं। बेकार पड़ी रहने वाली भूमि बंजर और अनुपजाऊ हो जाती है। इसके विपरीत समय पर फसल उपजाते रहने पर वह उर्वर, उपजाऊ बनी रहती है। काम में आते रहने वाली मशीन काफी समय तक सक्षम बनी रहती है, जबकि बेकार पड़ी रहने वाली कुछ ही समय में जंग आदि लगकर अनुपयोगी बन जाती है।

कर्मशीलता, कर्म साधना ही शक्ति संवर्द्धन का प्रमुख आधार है। कर्म कैसा भी क्यों न हो अंतत: वह कर्म है। सैनिक, व्यापारी, लेखक, उपदेशक, श्रमिक, मजदूर सभी अपने-अपने स्थान पर कर्मशील हैं। किसी कार्य को दृढ़ लगन, निष्ठा, सचाई के साथ-साथ दिल खोलकर करना 'कर्म साधना' है, जिससे शक्तियों के स्रोत खुलते जाते हैं। ये शक्ति-स्रोत ही जीवन में सिद्धियाँ बन जाते हैं। ये सिद्धि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता के वरदान प्राप्त कराती हैं। मनुष्य को समर्थ, शक्तिमान बनाती हैं।

अपने कार्यों की सक्रियता का उद्देश्य-केंद्र यदि अपनी व्यक्तिगत बातों तक सीमित रहेगा तो शक्तियाँ भी सीमित और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मर्यादित रहेंगी। व्यापक उद्देश्य, विशाल दृष्टिकोण के साथ ही मनुष्य की शक्तियाँ भी व्यापक, सार्वभौम और समर्थ बन जाती हैं। उनका प्रवाह अजस्र और अनंत बन जाता है। समष्टि के लिए सर्वजन हिताय कार्य करने वाले महापुरुषों में गजब की शक्तियाँ होती हैं, वे महान कार्यों का संपादन करते हैं। चूँकि इन महापुरुषों के कार्यक्रमों का उद्देश्य अनेकों का हितसाधन करना होता है। अत: अदृश्य रूप से उन सब की शक्ति घनीभूत होकर काम करती है। यही कारण है कि महापुरुषों का काम एक व्यक्ति का न होकर अनेकों का हो जाता है। उनके एक इशारे पर जनसमूह उमड़ पड़ता है। मनुष्य के कार्य, उसकी भावनाओं, विचारों का जितना व्यापक आधार होगा, उतनी ही क्षमताएँ, शक्तियाँ भी व्यापक बनेंगी। उनके लिए असंभव नाम का कोई शब्द नहीं रह जाता। प्रकृति भी अपने नियमों का व्यतिरेक कर उन्हें रास्ता देती है।

शक्तियों को सृजनात्मक, पारमार्थिक, रचनात्मक लक्ष्यपूर्ति के कार्यक्रमों में लगा देना ही काफी नहीं होता, उन्हें नियंत्रित और सुरक्षित रखना भी आवश्यक है, जिससे उनका दुरुपयोग और अपव्यय न हो। मोटर को गंतव्य स्थान की दिशा में गति दे देना ही काफी नहीं होता। मार्ग के घुमाव, उतार-चढ़ाव, दुर्घटनाजन्य परिस्थितियों से बचाने आदि के लिए उस पर ड्राईवर का पूरा-पूरा नियंत्रण होना आवश्यक है। इसके लिए उसका हाथ सदैव स्टीरिंग ह्वील पर, पैर ब्रेकों पर और निगाह मार्ग पर लगी रहती है। इसमें वह थोड़ी भी भूल-चूक कर दे अथवा अपना नियंत्रण खो बैठे तो ऐसी हालत में भयंकर दुर्घटना घटित होकर ड्राईवर और गाड़ी का भविष्य विनाश के रूप में ही परिणत होगा। ठीक इसी प्रकार प्रत्येक कार्य, प्रत्येक दिशा में लगी हुई शक्ति के नियंत्रण और सुरक्षा का सदैव ध्यान रखना आवश्यक है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शोर मचाना, जल्दबाजी करना, साधारण सी बात को असाधारण महत्त्व देकर उसमें अंधाधुंध लग पड़ना, बेतरतीब उलटा-सीधा काम करना, अपनी शक्ति का अपव्यय और व्यर्थ नष्ट करना ही है। इस तरह के व्यक्ति अपनी शक्ति-क्षमताओं को जल्दी ही नष्ट करके खोखले हो जाते हैं। फिर उनमें जीवन पर आगे कदम रखने की सामर्थ्य भी नहीं रहती और पराजय, असफलता का जीवन बिताते हैं। जो सिपाही अपनी तैयारी करते हुए मौके पर पहुँचने तक में ही थक कर चूर हो गया, वह क्या लड़ेगा?

शांति, तत्परता, व्यवस्था, धैर्य के साथ ही शक्तियाँ अपना काम ठीक-ठीक करती हैं। हड़बड़ाहट, भाग-दौड़, उछल-कूद, जल्दबाजी से काम तो खराब होते ही हैं, साथ ही शक्तियाँ भी व्यर्थ में नष्ट होती हैं। इंजिन में जो भाप काम करती है, उसे आगे बढ़ाती है, उसका शोर कभी नहीं सुना जाता। व्यर्थ में निकलने वाली भाप ही अधिक शोर करती है। अपने शक्ति भंडार को अक्षुण्ण, अजस्र, समर्थ बनाए रखने के लिए उसका दुरुपयोग रोकना चाहिए।

संसार को चलाने वाली सार्वभौमिक शक्ति सर्वत्र अपना काम कर रही है, किंतु उसकी आवाज कहीं सुनाई नहीं देती। जिस शक्ति की प्रेरणा से वर्षा होती है, सृजन और विनाश का चक्र चलता है, वृक्ष फलते-फूलते हैं, जिस शक्ति से एक छोटा सा बीज भूमि के कठोर पर्त को तोड़कर अंकुरित होता है, विशाल वृक्ष बनता है उसे कहीं देखा-सुना नहीं जाता। गंभीरता, प्रशांत भाव से बहने वाली नदी ही गहरी होती है। उथले पानी में सदैव आवाज होती रहती है। इसी तरह शक्ति का निवास भी धीर, वीर, गंभीर, प्रशांत, महामना व्यक्तियों में ही अधिक होता है। ओछे, छिछले स्वभाव के संकीर्णमना व्यक्ति ही अशक्त, निर्बल, सामर्थ्यहीन पाए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाते हैं। जिसका हृदय जितना बड़ा होगा उसमें उतनी ही बड़ी शक्तियों का निवास होगा। अनुशासित, अनुभवी, ज्ञानवृद्ध, सबल मन वाले व्यक्तियों में शक्ति का निवास होता है। उनके प्रत्येक कार्य सुनियोजित, संतुलित, विवेकपूर्ण, सही-सही परिणाम पैदा करने वाले होते हैं। उसमें ही दूरदर्शिता, नियंत्रण, सुरक्षा की गारंटी होती है। ऐसे व्यक्ति विरोधी वातावरण को भी अनुकूलता में परिणत कर ही लेते हैं।

शक्ति की उपलब्धि के लिए, क्षमताओं के विकास के लिए सधे हुए-काबू किए हुए मन, आत्मानुशासित जीवन, उदार दृष्टिकोण, विशाल हृदय, विवेक बुद्धि की आवश्यकता है। इससे मनुष्य को वह सामर्थ्य प्राप्त होती है जिससे प्रबल विरोध भी टकराकर स्वयमेव चूर-चूर हो जाते हैं। आत्म-संयम, मनोजय, मनोनिग्रह ही शक्ति प्राप्ति की साधना है।

शक्ति एक सामर्थ्य है जिससे दुनिया और जीवन की उपलब्धियाँ प्राप्त की जाती हैं। शक्ति का उपयोग शुभ कार्यों में करके सत्परिणाम भी प्राप्त किए जा सकते हैं और दुरुपयोग करके दुष्परिणाम भी। इन दोनों के अतिरिक्त एक इस तरह के व्यक्ति भी होते हैं जो अपनी अशक्ति, दुर्बलता या शिथिलता के कारण न कुछ अच्छा करते हैं न बुरा करते हैं। इससे कोई लाभ तो उन्हें नहीं होता, फिर भी जनसाधारण इन्हें भले मान लेता है। किंतु शक्तिशाली तो वस्तुतः वही है जो सामर्थ्य शक्ति रखते हुए भी दूसरों को हानि न पहुँचाकर लाभ पहुँचाते हैं और अपनी शक्तियों को सत्कर्मों, शुभ कार्यों में ही लगाते हैं। नैतिकता की रक्षा के लिए शुभ की स्थापना, न्याय का व्यवहार, सत्कर्मों के आयोजन के लिए शक्ति को लगाना ही शक्तिसंपन्न का आधार होना ही चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शक्ति का स्त्रोत हमारे अंदर है

आज जैसी भी कुछ हमारी स्थिति है वह सब हमारी मानसिक स्थिति का परिणाम है। मन कर्त्ता है। संसार की संपूर्ण बाह्य रचना की शक्ति और आधार मन है। हमारा आहार, रहन-सहन, चाल-चलन, व्यवहार-विहार, शिक्षा-समुन्नति ये सारी बातें हमारी मानसिक दशा के अनुरूप ही होती हैं। जैसा कुछ चिंतन करते हैं, विचार करते हैं, वैसे ही क्रिया-कलाप भी होते हैं और तदनुसार वैसे ही अच्छे-बुरे कर्म भी बन पड़ते हैं। सुख और दु:ख, बंधन और मुक्ति चूँकि इन्हीं कर्मों का परिणाम है इसलिए हमारे उद्धार और पतन का कारण भी हमारा मन ही है।

असफलता का दुर्भाग्य केवल मनोबल की कमी का ही परिणाम है। यत्न करते हुए थोड़ी सी परेशानी ही प्रयत्न से विचलित कर देने के लिए काफी होती है। थोड़ा सा शारीरिक दबाव, धन, हानि, व्यापार में घाटा, शिक्षा में अनुत्तीर्णता जैसी निराशाजनक घटनाएँ आईं कि प्रयत्न छोड़ बैठे। यह घटिया मनोबल का लक्षण है कि मनुष्य अल्प श्रम से अधिक परिणाम प्राप्त करना चाहे। इच्छाओं का आकार-प्रकार जिनका बड़ा है उतने ही बड़े प्रयत्नों की अपेक्षा की जाती है। यदि उतने प्रयत्न न किए जा सके तो सफलता संदिग्ध ही बनी रहेगी।

विद्यार्थी परीक्षा उत्तीर्ण करने की दृष्टि से अध्ययन करते हैं। फीस के लिए पैसे जुटाते हैं, समय लगाते हैं, सभी शारीरिक सुख त्यागकर अध्ययन में लगे रहते हैं। कदाचित परीक्षा में ऐसा कोई विद्यार्थी फेल ही हो जाए तो यह नहीं समझना चाहिए कि अपना श्रम, धन और समय व्यर्थ चला गया। परीक्षा में उत्तीर्ण होने का प्रमाण पत्र नहीं मिला यह बात महत्त्वपूर्ण नहीं है। मन के महत्त्व

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का प्रश्न है। महत्त्व इस बात का है कि उस शिक्षा से बौद्धिक बल बढ़ा, विचार-शक्ति आई और अनेक उलझनों को सुलझाने की महत्त्वपूर्ण सामर्थ्य प्राप्त हुई या नहीं। प्रमाण पत्र इन्हीं बातों की गारंटी का ही नाम तो है जो यदि न भी मिले तो यह नहीं समझना चाहिए कि हमारा प्रयत्न निष्फल चला गया।

परिस्थितियाँ यदि प्रतिकूल हैं तो भी साधनों का उपयोग करते रहना चाहिए। थोड़ी सी पूँजी से बढ़कर उच्च स्तर के व्यापार तक पहुँचा जा सकता है, किंतु मानसिक शक्ति अपने साथ बनी रहनी चाहिए। कार्य करते समय ऊबें नहीं और उत्तेजित भी न हों। यह समझ ले कि हमें तो लक्ष्य तक पहुँचना है। जितनी बार गिरो, उतनी बार उठो। एक बार गिरने से उसका कारण मालूम पड़ जाएगा तो दुबारा उधर से सावधान हो जाओगे। यह स्थिति निरंतर चलती रहे तो अनेक बाधाओं के रहते हुए भी अपने लिए उन्नति का मार्ग निकाला जा सकता है। हार मन के हारने से होती है। मन यदि बलवान होता है तो इच्छापूर्ति को भी अधिक सुनिश्चित ही क्यों न समझना चाहिए।

आज यदि स्थिति ठीक नहीं है तो भविष्य में भी वह ऐसी ही बनी रहेगी, ऐसा कमजोर बनाने वाला विचार अपने मस्तिष्क से निकाल दें। श्रेष्ठता अंदर सुप्तावस्था में पड़ी हुई है। इसमें संशय नहीं कि हम हर आवश्यकता अपने आप पूरी कर सकते हैं, पर इसके लिए सतत अभ्यास की आवश्यकता है। अपना उद्योग बंद न करें। अकर्मण्यता और आलस्य का, अधीरता और प्रयत्नहीनता का साथ छोड़कर '**यत्नदेवो भव**' की उपासना आरंभ कर दोगे तो पुरुषार्थ का देवता ही अपने लिए अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न कर देगा। काम करने में शिथिलता न व्यक्त करें। ढिलाई न करें। चिंतित न हों। आत्म-विश्वास न खोओ। धैर्य के साथ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

'यत्न' देव का आश्रय पकड़े रहें तो यह निश्चय है कि आज की यह दीन-हीन अवस्था कल भी संपन्नता अवस्था में बदलकर रहेगी।

ऊँचे से ऊँची इमारत की नींव भी नीचे ही रखी होती है। ऊँचे उठने का शुभारंभ निचली पृष्ठभूमि से किया जाता है। निर्धन धनकुबेर होते हैं। पहलवान कोई माँ के पेट से बनकर नहीं आता। उसके लिए तो विधिवत उपासना करनी पड़ती है।

यह ठीक है कि आज अपनी दशा अच्छी नहीं, कोई विशेष गुण भी दिखाई नहीं देता फिर भी निराशा का कोई कारण नहीं। एक शक्ति अभी भी अपने पास है और वह अंत तक पास रहेगी। वह है मन। मन की शक्ति को संपादन करने का तरीका जानने का प्रयत्न करें। छोटे-छोटे कामों में मनोयोग का प्रयोग किया करें। एक दिन मनोबल इतना बढ़ जाएगा जब ऊँचे से ऊँचा कार्य करने में भी हिचक नहीं होगी और उत्साहपूर्वक, दृढ़तापूर्वक सफलता की मंजिलें पार करते हुए आगे बढ़ सकें। श्रेष्ठताएँ अंदर छिपी पड़ी हैं, उनका समर्थन और अभिवर्द्धन करें, दूसरों की ओर देखें वे किस तरह आगे बढ़े हैं? दूसरों से उदाहरण लें कि उन्होंने कैसे सफलताएँ पाई हैं। बिना हाथ-पाँव डुलाए किसी के भाग देवता ने साथ नहीं दिया। चुपचाप बैठे रहेंगे तो उन्नति का अवसर पास से गुजरकर चला जाएगा, आपको केवल हाथ मसलकर रह जाना पड़ेगा।

आत्म-संयम करें, इससे बिखरा हुआ मानसिक संस्थान जगेगा। निश्चेष्ट मनुष्य इसलिए होता है कि उनकी शक्तियाँ इधर-उधर बिखरी हुई होती हैं। मामूली सी शक्ति से कोई काम भी नहीं बनता। बिखरी हुई सूर्य की किरणें सारे शरीर पर असंख्य मात्रा में गिरती हैं। तो भी उनसे कुछ विशेष हलचल उत्पन्न नहीं होती,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर यदि एक-डेढ़ इंच जगह की किरणों को आतिशी शीशे से एक जगह पर एकत्रित कर दिया जाए तो इससे दावानल का रूप धारण कर एकता की क्षमता से संपन्न आग पैदा हो जाएगी। हम अपनी शक्तियों को इधर-उधर के बेकार के कार्यों में खरच करते रहते हैं जिससे जीवन में कोई विशेषता नहीं बन पाती। आत्म-संयम से बिखरी हुई शक्तियाँ एक स्थान पर एकत्रित होकर अभीष्ट परिणाम के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करती हैं। मन की सूक्ष्म से सूक्ष्म शक्तियों का जागरण आत्म-संयम के द्वारा ही होता है।

किसी समय भारतवर्ष ने मन की शक्तियों का संपादन करके अनेक आश्चर्यजनक शक्तियाँ और सिद्धियाँ प्राप्त की थीं। एकाग्रता के अभ्यास द्वारा यह संभावनाएँ अब भी जाग्रत की जा सकती हैं। इसके लिए अपने आप को गति देने की आवश्यकता है। जी तोड़ परिश्रम करने की आवश्यकता है। प्रयत्न पर प्रयत्न करने की जरूरत है। हमारे भीतर जो सिद्धियाँ बिखरी हुई पड़ी हैं उन्हें कार्यक्षेत्र में लगाने भर की देर है, बस हमारी यह विषम परिस्थितियाँ अधिक दिनों तक ठहरने वाली नहीं हैं।

उन्नति के लिए चाहे कितने ही व्यक्ति सहानुभूति व्यक्त क्यों न करें पर यह निर्विवाद है कि हमारा इससे कुछ काम न चलेगा। हमें अपनी स्थिति स्वयं सुधारनी होगी। स्वयं कठिनाइयों से लड़कर नया निर्माण करना पड़ेगा। विशृंखलित शक्तियों को जुटाकर आगे बढ़ने का कार्यक्रम बनाना पड़ेगा। यह बात यदि समझ में आ जाए तो सफलता की आधी मंजिल तय करली, ऐसा समझना चाहिए। शेष आधे के लिए मनोबल जुटाकर यत्नपूर्वक आगे बढ़िए, आपका सौभाग्य आपके मंगल-मिलन के लिए प्रतीक्षा कर रहा है। स्वागत के लिए आगे खड़ा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शक्तियों का अपव्यय रोका जाए

शक्तियों के अपव्यय को रोकने से उनका संग्रह होता है और वह संचय बढ़ते-बढ़ते कुछ ही समय में समृद्धि का रूप धारण कर लेता है। उन्नतिशील लोगों के कार्य-क्षेत्र भिन्न-भिन्न भले ही रहे हों पर तरीका सभी ने एक ही अपनाया है—अपनी क्षमता को दुरुपयोग से बचाकर सदुपयोग में लगाना। इस मंत्र की साधना को जो कोई भी कर सकेगा उसे सिद्धियाँ मिले बिना रहेंगी नहीं। लक्ष्य भौतिक हो चाहे आध्यात्मिक, तरीका यही अपनाना पड़ता है। जिन्हें भौतिक प्रगति अभीष्ट है, वे अपनी भौतिक क्षमताओं का अपव्यय रोककर उस कार्य में संलग्न करते हैं जिससे लाभ होने की आशा हो। इसी प्रकार आध्यात्मिक लक्ष्य वाले व्यक्ति निरंतर यह ध्यान रखते हैं कि उनकी सामर्थ्य का प्रतिकूल दिशा में तनिक भी प्रयोग हो रहा हो तो उसे रोककर अभीष्ट मार्ग पर लगाए जाने में पूरी-पूरी सावधानी बरती जाए।

संसार के प्रगतिशील देशों ने जो भौतिक प्रगति की है, उसमें किसी देवता का वरदान नहीं वरन उसकी यह सतर्कता ही प्रधान कारण बनी हुई है कि अपनी सामर्थ्य का उचित उपयोग किया जाए। इन सतर्कताओं से समय का सदुपयोग, धन का सदुपयोग, वाणी का सदुपयोग, विचारों का सदुपयोग, व्यवहार का सदुपयोग, इंद्रियों का सदुपयोग, भावनाओं का सदुपयोग आदि का जिनने जितना ध्यान रखा है उन्हें उतनी ही मात्रा में प्रगति के पथ पर बढ़ चलने में, सफलता प्राप्त कर सकने में सुविधा हुई है।

समय को ही लीजिए, वह मनुष्य की सबसे बड़ी संपत्ति है। समय का उपयोग जिस दिशा में भी किया जाए उसी में आशातीत प्रगति होने लगती है। हम भारतवासी अपने समय में से एक चौथाई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का भी सदुपयोग मुश्किल से कर पाते हैं, शेष तीन चौथाई आलस्य, प्रमाद, मटरगस्ती और फूहड़ ढंग से काम करने में बरबाद होता रहता है। लोग समझते यह हैं कि हम सारे दिन काम में लगे रहते हैं, हमें फुरसत नहीं मिलती, पर जब यह जाँचा जाता है कि उनने इतने व्यस्त रहकर भी कितना काम कर लिया तो परिणाम बहुत ही स्वल्प और निराशाजनक दीखता है। व्यवस्था, कार्य-विभाजन, नियमितता के आधार पर पूरी दिलचस्पी एवं मनोयोग के साथ जो कार्य किए जाते हैं, वे थोड़े समय में अधिक मात्रा में एवं उत्तम स्तर के बन पड़ते हैं। पर जो भार ढोने की तरह अधूरे मन से, अस्त-व्यस्त क्रम के साथ किए जाते हैं उनमें सारा दिन गुजार देने पर भी प्रतिफल बहुत ही स्वल्प और घटिया स्तर का सामने आता है।

आमतौर से आजीविकोपार्जन में आठ घंटे लगते हैं। आठ घंटे सोने और आराम के लिए निकाल दें तो शेष आठ घंटे ऐसे बच जाते हैं जिनकी बरबादी रोककर यदि उन्हें व्यवस्थित कर लिया जाए तो एक नया जीवन किसी भी उन्नति के लिए मिल सकता है। आठ घंटे के परिश्रम में आमतौर से रोजी-रोटी की इतनी बड़ी समस्या जिस पर जीवन का सारा दारोमदार निर्भर रहता है हल हो सकती है, तो सोने के बाद बचे हुए आठ घंटे में किसी भी दिशा में आशाजनक प्रगति की जा सकती है। संसार में सभी उन्नतिशील लोगों ने इस बचे हुए समय को शिक्षा, स्वास्थ्य, उपासना, परमार्थ, कला आदि की साधना में उपयोग किया है और इतना लाभ उठाया है जितना सामान्य व्यक्ति पूरे समय उसी कार्य में लगे रहने पर उठा सकते हैं।

समय का मूल्य और महत्त्व ठीक तरह न समझने के कारण हम उसका सदुपयोग नहीं कर पाते। घड़ी तो कितने ही व्यक्ति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बाँधे फिरते हैं पर एक-एक मिनट का कार्य-विभाजन और सदुपयोग करने वाले लोग उनमें से बहुत ही कम होते हैं। घड़ी का वास्तविक लाभ वही उठाता है जो अपने एक-एक क्षण का सदुपयोग करने की व्यवस्था ठीक रखने के लिए घंटे-मिनटों पर ध्यान रखे रहता है। आलस्य और प्रमाद ही हमारे दारिद्रय और पतन का प्रमुख कारण है। जब तक उन्हें न छोड़ा जाएगा, श्रमशीलता, फुरती, नियमितता, समय की पाबंदी, अपने काम में पूरी दिलचस्पी रखने की आदत हम न डालेंगे तब तक इसी हीन दशा में पड़ा रहना पड़ेगा। व्यवस्थित पुरुषार्थ ही भौतिक जीवन की समस्त सफलताओं का प्रधान कारण है। देवता का अनुष्ठान करने से लोग तुच्छ परिस्थितियों से ऊँचे उठकर महानता का गौरव प्राप्त करने में समर्थ हुए हैं। हमें अपने समाज और देश को सुखी, संपन्न और समृद्ध बनाना हो तो इन सद्गुणों को जन-जीवन में प्रवेश कराना पड़ेगा। धन, संपत्ति, आमदनी या सुख-साधन किसी अन्य प्रकार से बढ़ जाने पर भी समय को गँवाते रहने वाले प्रमादी लोग दीन-दरिद्री ही बने रहेंगे। उनकी बढ़ी हुई आमदनी निरर्थक अपव्यय में ही नष्ट होती रहेगी।

समय के सदुपयोग की भाँति ही धन का सदुपयोग अपना महत्त्व रखता है। धन कमाना कितने ही लोग जानते हैं, पर उसे खरच करना किन्हीं विरलों को ही आता है। जो पैसा स्वास्थ्य-संवर्द्धन के उपयुक्त सात्त्विक आहार-विहार की व्यवस्था में, मानसिक विकास के लिए ज्ञान-संवर्द्धन में, परिवार को प्रगतिशील बनाने के साधन जुटाने में, लोकहित के परमार्थकारी सत्कर्मों में खरच किया जाना चाहिए। वह नशेबाजी, सिनेमा, शौकीनी, यारबासी, फैशनबाजी एवं विलासिता के ठाठ-बाट जमा करने जैसी निकम्मी बातों में बरबाद होता रहता है। उपयोगी कार्य रुक जाते हैं और निरर्थक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बेहूदगियाँ सारा पैसा खा जाती हैं। आर्थिक तंगी, कर्जदारी के कष्ट से हमारा सारा समाज कराह रहा है। इसका प्रधान कारण एक ही है—खरच का क्रम आमदनी के अनुरूप संतुलित न रखना। गरीब और कम आमदनी वाले व्यक्ति भी जब तथाकथित 'स्टेंडर्ड' बनाने के फेर में न पड़कर अपनी औकात और हैसियत के अनुसार केवल उपयोगिता के लिए ही खरच करने की नीति बना लेते हैं और अपव्यय की मूर्खता करना छोड़ देते हैं तो सीमित साधनों से भी उन्हें व्यवस्थित जीवन का आनंद मिलने लगता है।

आर्थिक उन्नति के जितने भी महत्त्वपूर्ण उपाय हो सकते हैं उनमें सबसे प्रभावशाली यह है कि हर व्यक्ति पैसे का महत्त्व समझे और उसे केवल सदुद्देश्य के लिए, सद्व्यय करने की नीति का कठोरतापूर्वक पालन करने लगे। बेकार कामों में होने वाली धन की बरबादी को रोका जा सके और उसे जीवन विकास के कार्यों में विवेकपूर्वक प्रयुक्त किया जा सके तो वर्तमान आमदनी से भी हमें विकसित जीवन का लाभ मिल सकता है। यदि हमें अपने समाज को धनी बनाना हो तो कृषि, उद्योग, शिल्प, वाणिज्य आदि का संवर्द्धन करने के साथ ही यह और भी नितांत आवश्यक है कि हर व्यक्ति के स्वभाव में मितव्ययता और धन के सदुपयोग की बात गहराई तक बैठा दी जाए।

वाणी का सदुपयोग करना हम सीख जाएँ तो प्रिय, हित और मित ही बोला करें। दूसरों की प्रसन्नता और हिम्मत बढ़ाने वाली आदर, विनय और मधुरता से भरी हुई वाणी सबको मधु से भी अधिक मधुर लगती है। उसे सुनने के लिए हर किसी के कान प्यासे रहते हैं। जिससे दूसरों का हित साधन होता हो ऐसी सन्मार्ग की प्रेरणा देने वाली उपयोगी बातें करने के लिए ही वाणी उपयोग किया जाया करे तो वह कितनी सार्थक बन सकती है। कोयल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और कौवे की वाणी का अंतर और उसका प्रतिफल जानते हुए भी हमारे स्वभाव में कटु-भाषण ही समाया रहता है। निंदा, चुगली, व्यंग्य, उपहास, कठोरता, कर्कशता, अहंकार, शेखी जैसी बुराइयों से भरी हुई दूसरों का दिल दुखाने वाली वाणी ही अकसर हम लोग बोला करते हैं, कतरनी की तरह लबड़-लबड़ बेकार में जीभ चलाते रहने वाले बातूनी लोग अपना और दूसरों का समय बरबाद करते हैं और बात का बतंगड़ बनाने के लिए कुछ न कुछ ऐसे प्रसंग उठाते हैं जिससे दुर्भावनाएँ बढ़ चलें। खरी बात कहने के नाम पर तीर सी चुभने वाली कटु भाषा बोलने वाले असभ्य लोग अंततः अपने चारों ओर शत्रुता का वातावरण बना लेते हैं। वाणी का सदुपयोग यदि सीख लिया जाए तो चारों ओर प्रेम की धारा बहने लगे और सहयोग एवं सद्भाव का स्वर्गीय वातावरण इस धरती पर सदैव फैला-फैला दीख पड़ने लगे। क्लेश, कलह और द्वेष, दुर्भाग्य वाणी के दुरुपयोग से बढ़ते हैं। सुसंस्कृत अभिभाषण का सतगुण यदि व्यापक रूप से अपनाया जा सके तो सतयुग जैसी स्नेह-सौजन्य से भरी परिस्थितियाँ आज भी चारों ओर परिलक्षित हो सकती हैं।

इंद्रियों के दुरुपयोग के कारण ही हमारा शरीर खोखला होता है। शाक-पात खाकर भी मनुष्य सौ वर्ष जी सकता है। पर जीभ का चटोरपन, कामेंद्रिय की विषय वासना तथा अन्य इंद्रियों का अपनी-अपनी मर्यादाओं का व्यतिक्रम करना अस्वस्थता एवं दुर्बलता का कारण बन जाता है। आम शिकायत है कि लोगों का स्वास्थ्य दिन-दिन गिरता चला जाता है और विविधविध रोगों का आक्रमण तीव्रता के साथ बढ़ता जाता है। इनके कारण और निवारण ढूँढ़ने के लिए प्रयोगशालाओं में बड़े-बड़े अन्वेषण होते रहते हैं। इससे कुछ भी प्रयोजन सिद्ध होने वाला नहीं है। जिह्वा, इंद्रिय और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कामेंद्रिय पर अंकुश लगाए बिना, आहार और विहार में सात्त्विकता एवं संयम का समावेश किए बिना जीवनी शक्ति का क्षरण रोका न जा सकेगा। असंयम ही हमारे स्वास्थ्य का प्रधान शत्रु है, उसे परास्त किए बिना शारीरिक सुख की आशा दुराशा मात्र ही बनी रहेगी।

शिष्टाचार, नागरिकता की मर्यादाओं का पालन एवं कर्त्तव्यपरायणता का नियंत्रण स्वीकार न करके उच्छृंखलता की प्रवृति बुरी तरह बढ़ती चली जा रही है। वासनाओं और तृष्णाओं में ग्रसित मनुष्य अनैतिक एवं उद्धत गतिविधियाँ अपनाते हैं और अपराधों की बढ़ोत्तरी होती जाती है। आवेशों पर नियंत्रण न रहने से लोग छोटे-छोटे कारणों को लेकर आपे से बाहर हो जाते हैं और न करने लायक उद्धत कृत्य कर डालते हैं। छुरेबाजी, हत्याएँ, आत्म हत्याएँ, मुकदमेबाजी, पार्टीबंदी, षड्यंत्र आदि की दुर्घटनाओं के पीछे मनुष्य की गलत ढंग से सोचने की आदत ही प्रधान कारण रही होती है। यदि लोग गंभीरतापूर्वक सोचने, दूसरों की परिस्थिति समझने और उलझनों को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाने का प्रयत्न करें, सहिष्णुता, सहनशीलता एवं सद्भावना से काम लें तो पेचीदा दीखने वाली उलझनें भी सहज ही सुलझ जाया करें और भिन्नता के बीच एकता बनाए रहने का रास्ता निकल आया करे।

विचारों का असंयम मानव-जाति के लिए एक भयंकर अभिशाप एवं दुर्भाग्य बना हुआ है। हम मानवोचित उत्कृष्ट आदर्शवादी विचारधारा का परित्याग कर पशुओं एवं पिशाचों के ढंग से सोचते हैं। आकांक्षाओं का स्तर बहुत ही निकृष्ट रहता है। साहस के अभाव में चिंता, भय, निराशा, शोक, क्षोभ से चित्त निरंतर उद्विग्न बना रहता है। कलह और संघर्षों का, द्वेष और दुर्भावनाओं का विस्तार, विचारधारा का स्तर अधोगामी होने के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कारण ही होता है। यदि लोग ऊँचे ढंग से सोचें, अपने मानवीय गौरव का स्मरण रखें और मनुष्यता की प्रतिष्ठा एवं मर्यादा के अनुरूप सोचें तो निकृष्ट गतिविधियाँ अपनाने का अवसर ही न आए। कुकर्मों की सृष्टि कुविचारों से ही होती है। दीनता, दरिद्रता और पतन के लिए निकृष्ट कोटि की विचारधारा ही उत्तरदायी है। यदि विचारशक्ति का संयम और सदुपयोग कर हम ध्यान देने लगें तो नर को नारायण और जीव को ब्रह्म के रूप में परिणत होते हुए तनिक भी देर न लगे।

जीवन अविकसित एवं निम्न स्तर का बना इसलिए पड़ा रहता है कि हम अपनी शक्तियों के महत्त्व को पहचानते नहीं, उनको कुमार्ग से हटाने और सन्मार्ग पर लगाने का प्रयत्न नहीं करते। यह उपेक्षा जब तक बनी रहेगी, तब तक बाह्य साधनों के द्वारा सुखी बनने के लिए किए गए प्रयत्न निष्फल ही जाते रहेंगे। मनुष्य अपने भीतर इतनी प्रचंड शक्ति और सामर्थ्य भरा बैठा है कि उसके सदुपयोग का संकल्प एवं साहस कर लेने से प्रगति का प्रत्येक द्वार खुल सकता है और मनुष्य ऊँचे से ऊँचे यहाँ तक कि परमात्मा की समीपता प्राप्त करने तक की स्थिति उपलब्ध कर सकता है।

हम संयमी बनें, शक्ति का अपव्यय न करें

शक्ति के इस अपव्यय को रोकने का नाम ही 'संयम' है। किसी वस्तु को प्राप्त करना निस्संदेह कठिन व महत्त्वपूर्ण बात है, किंतु संग्रहीत वस्तु को सुरक्षित बनाए रखना उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। संग्रह और त्याग की दोनों क्रियाएँ साथ-साथ चलती रहें तो कहीं भी शक्ति एकत्रित न होगी। शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक दृष्टि से शक्तिमान बनने का एक ही तरीका है कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इनकी क्रिया शक्ति का दुरुपयोग न हो, तभी मनोवांछित ध्येय सिद्धि या सफलता मिल सकती है।

नियंत्रित जीवन का आधार संयम है। इससे समस्त शक्तियाँ केंद्रीभूत होती हैं, इन्हें जिधर ही लगा दो, उधर ही चमत्कारिक परिणाम उपलब्ध किए जा सकते हैं। संयम से शक्ति, स्वास्थ्य, मन की पवित्रता, बुद्धि की सूक्ष्मता और भावना की सुंदरता जाग्रत होती है। इसके लिए अपने जीवन में दृढ़ इच्छा, शील व जीवनचर्या पर पर्याप्त ध्यान देना पड़ता है। आइए अब यह विचार करें कि हमें यह सावधानी कहाँ-कहाँ रखनी है। किन-किन अवस्थाओं में किस प्रकार संयम की उपयोगिता है।

आत्म-निर्माण के तीन क्षेत्र हैं—शरीर, मन और समाज। सुव्यवस्थित जीवन जीने के लिए स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन और सभ्य समाज की रचना अनिवार्य है। शरीर दुर्बल और रोगग्रस्त है तो कोई सुखी न रहेगा। मन अपवित्र है तो द्वेष, दुर्भावना व कलह का ही वातावरण बना रहेगा। हमारे समाज में कुरीतियाँ और अनाचार फैल रहे हैं तो हम उनसे अछूते बचे रहेंगे, ऐसी कोई सुविधा इस संसार में नहीं है। इन तीनों अवस्थाओं के नियंत्रण को ही ऋषियों ने मन, वचन और कर्म का संयम कहा है।

यह सत्य है कि संसार के सभी पदार्थ भोग के लिए हैं, किंतु इसकी भी एक सीमा और मर्यादा होती है। आहार शरीर को शक्ति प्रदान करता है। किंतु चाहे भूख न हो, जो मिले खाते जाइए तो अपच का होना स्वाभाविक है। पेट की शक्ति के अनुरूप आहार की एक सीमा निर्धारित कर दी गई है, उतने में रहें तो यह आहार अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा। इससे स्वास्थ्य आरोग्य स्थिर रहेगा, किंतु जहाँ मर्यादा का उल्लंघन हुआ कि रोग-शोक के लक्षण दिखाई देने लगेंगे। इसलिए स्वास्थ्य विद्या के आचार्यों ने आहार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ग्रहण करने के तरीकों पर अधिक संयम व सावधानी रखने को कहा है।

शरीर-विज्ञान और आचार-शास्त्र के नियमों से भी यही बात पुष्ट होती है। ऐहलौकिक और पारलौकिक सुख-सफलताओं का आधार—स्वस्थ शरीर है, किंतु नवयुवक और नवयुवतियों में यह भाव पाया जाता है कि 'संयम' कोई असाधारण और असंभव वस्तु है। इस संबंध में वे काम-वासना की प्रबलता का उदाहरण भी देते हैं। कई तो इसे शरीर-हित के लिए हानिकर भी बताते हैं, किंतु डॉ. ई. मेरियर के शब्दों से यह संदेह दूर हो जाता है। उन्होंने लिखा है—''पूर्ण संयम अनिष्टकारी होता है, यह धारणा भ्रांत और काल्पनिक होती है। इसका घोर प्रतिवाद होना आवश्यक है। इस भ्रांत धारणा से बालकों का ही नहीं, अभिभावकों का भी अहित हो सकता है।'' इंद्रियसंयम की आवश्यकता पर जोर डालते हुए गीताकार ने लिखा है—

इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ।
तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ॥

—गीता ३/३४

मनुष्य को चाहिए कि इंद्रिय के अर्थ में अर्थात सभी इंद्रियों के भोगों में स्थित जो राग-द्वेष हैं, उन दोनों के वश में नहीं होवे, क्योंकि ये दोनों ही कल्याणकारी मार्ग में विघ्न पैदा करने वाले शत्रु हैं।

अनियंत्रित काम-वासना के दुष्परिणाम सर्वविदित हैं। असंयम से आलस्य और प्रमाद उत्पन्न होता है। शरीर में विकृति व अनेक रोगों में ग्रस्त हो जाने की आशंका बढ़ जाती है, जो कई पीढ़ियों तक चलती रहती है। ऐसी भूल करना अपने आप पर घोर अत्याचार करना है। नाड़ी-दौर्बल्य के रोगियों की संख्या उन लोगों में अधिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पाई जाती है जो अत्यधिक विषयी होते हैं, जिनके खान-पान और रहन-सहन में कोई आचार-विचार नहीं होता। पीछे यह बीमारी परंपरागत बँध जाती है, जो कई पीढ़ियों तक दुःख देती है।

इसके विपरीत जिनके आचरण संयमित होते हैं, उनमें शक्ति होती है। संयम से सूक्ष्म दृष्टि विकसित होती है। डा. मौनटे गाजा (फ्रांस) ने लिखा है—"चारित्रिक पवित्रता से शरीर में उत्पन्न हुए किसी रोग का मुझे ज्ञान नहीं है। समस्त व्यक्ति और विशेषकर नवयुवक व नवयुवतियाँ संयम से तत्काल उत्पन्न होने वाले लाभों से लाभान्वित हो सकते हैं। ब्रह्मचर्य से स्मृति शांत और ताजी बनी रहती है। इच्छा-शक्ति में स्फूर्ति, शरीर में बल और मस्तिष्क में सुदृढ़ विचार बने रहते हैं। इनके कारण समस्त शरीर में सौंदर्य और आकर्षण परिलक्षित होने लगता है।"

जिह्वा और कामेंद्रिय की उत्तेजना को यदि साध लें तो स्वास्थ्य रक्षा की प्रक्रिया बड़ी आसानी से पूरी की जा सकती है। भोजन भूख मिटाने या शक्ति प्राप्त करने के लिए करते हैं, जीभ के स्वाद के लिए नहीं। भोगी व्यक्तियों की रुचि स्वादयुक्त व्यंजनों में बनी रहती है। किंतु संयमशील व्यक्ति का आहार केवल जीवन धारण किए रहने के लिए होता है, जिसमें स्वाद, चटपटे मसालों, विविध व्यजंनों की राई-रत्तीभर भी गुंजाइश नहीं होती। शराब, मांस और दूसरे मादक द्रव्यों का सेवन हानिकारक होता है। ये पदार्थ व्यक्ति की विवेक बुद्धि को समाप्त कर देते हैं।

जो सदैव ईर्ष्या-द्वेष, परछिद्रान्वेषण के विचारों में डूबे रहते हैं, वे अकारण ही अपनी मानसिक शक्तियों का अपव्यय करते रहते हैं, उन्हें न तो किसी प्रकार का भौतिक सुख मिलता है, न आध्यात्मिक लाभ। सामाजिक-कलह, अव्यवस्था का कारण भी ऐसे ही लोग होते हैं, जिनके विचार संयमित नहीं होते।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शारीरिक और मानसिक शक्तियों का नियंत्रण कर लें तो सामाजिक नियंत्रण की बात अपने आप पूरी हो जाती है। इन दोनों का मिश्रित रूप ही समाज की व्यवस्था का कारण बनता है। व्यक्ति से ही समाज बनता है। जिस समाज के व्यक्तियों में भले विचार होंगे, वहाँ शांति व सुव्यवस्था अवश्य होगी। अनियंत्रित व स्वेच्छाचारी मनुष्य ही स्थान-स्थान पर कलह व कटुता उत्पन्न करते हैं। इसलिए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नियंत्रण की आवश्यकता है, इसी से शक्ति-संतुलन व सुव्यवस्था बनी रह सकती है। इस पुण्य-प्रक्रिया का प्रारंभ आत्म-संयम से ही करना होगा। पीछे इसके लाभों को देखते हुए दूसरे भी चल पड़ेंगे, पर पहले तो यह पग स्वयं बढ़ाना पड़ेगा।

जीवन संग्राम में पुरुषार्थ की आवश्यकता

यह संसार और मानव-जीवन संघर्षमय है। संघर्ष ही इनका स्वभाव है। जीवनभर मनुष्य को कुछ न कुछ करना ही पड़ता है। बिना संघर्ष के जीवन पथ पर एक कदम भी आगे बढ़ना संभव नहीं होता। गति का अभाव ही मृत्यु है। जो जीवन में विशेष सफलताएँ अर्जित करना चाहते हैं उन्हें तो और भी अधिक संघर्ष करना पड़ता है। कोई व्यक्ति चाहे कि मैं संघर्षशून्य जीवन बिता लूँ तो यह असंभव है। इस संसार की बनावट ही कुछ ऐसी है, जहाँ संघर्षहीन व्यक्ति का एक ही रास्ता है विनाश और पतन का। क्योंकि यहाँ संघर्ष से बचकर भागने से एक ओर तो जीवन-निर्वाह की गति का ही क्षय होने लगता है; दूसरे बुराइयों की विरोधी शक्तियों को प्रोत्साहन मिलता है, जो मनुष्य को शांत और चुपचाप नहीं बैठने देतीं। इसलिए मनुष्य के सामने सम्मान सहित जीवित रहने का एक ही मार्ग है—संघर्ष का मुकाबला किया जाए, पूरी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शक्ति, साहस और दृढ़ता से। इस तरह के सजीव प्रयत्न को पुरुषार्थ कहते हैं। पुरुषार्थ ही जीवन का मूलमंत्र है। यही मनुष्य का सच्चा सहायक है—

अभिमानवतो मनस्विनः प्रियमुच्चैः पदमारुरुक्षतः।
विनिपातनिवर्त्तनक्षमं मतमालम्बनमात्मपौरुषम्॥

—सु० भां० १५८/३९१

उन्नति के पद को प्राप्त करने के इच्छुक, सम्मानयुक्त धीर पुरुष आपत्ति निवारण करने में समर्थ अपने पुरुषार्थ का आश्रय लेना ही उचित मानते हैं। पुरुषार्थ ही शूरवीरों का सच्चा सहायक होता है।

पुरुषार्थी सफलता के लिए किसी के सहारे या भाग्यकृपा की प्रतीक्षा नहीं करता। वह कहता है—

कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।
गोजिद् भूयासमश्वजिद् धनंजयो हिरण्यजित्॥

—अथर्व० ७/५२/८

दाहिने हाथ में मैं अपना पुरुषार्थ लिए हूँ और बाएँ हाथ में सफलता। प्रभुकृपा से अपने परिश्रम से गोधन, अश्वधन, स्वर्ण आदि का विजेता मैं स्वयं ही होऊँ।

जिसमें पूरी शक्ति से काम करने की दृढ़ लगन है उसके मार्ग में चाहे कितना प्रबल विरोध का प्रवाह आए, वह उसकी गति को अवरुद्ध नहीं कर सकता। पीछे नहीं हटा सकता। आप आगे बढ़ने का प्रयत्न जितनी दृढ़ता के साथ करेंगे, सफलता उतनी ही आपके समीप आती जाएगी। पुरुषार्थ सब अभावों की पूर्ति करता है, इसलिए कहा है—'**उद्योगे नास्ति दारिद्र्यम्**' अर्थात पुरुषार्थ करने पर दरिद्रता नहीं रहती। शास्त्रकार ने कहा है—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तथा स्वर्गश्च भोगश्च निष्ठ्या च मनीषिता।
सर्वं पुरुषकारेण कृतेनेहोपलभ्यते॥

पुरुषार्थी को निष्ठा के द्वारा स्वर्ग, भोग, बुद्धिमत्ता इन सबकी उपलब्धि होती है।

आप में योग्यता की कितनी ही कमी हो, यदि आप में वह शक्ति है जो किसी भी निर्दिष्ट लक्ष्य से हटना नहीं जानती, जो कार्य आपने शुरू किया है उसे छोड़ना नहीं जानती तो आप एक दिन सफलता की मंजिल तक पहुँच ही जाएँगे। इसके विपरीत काफी योग्यता रखते हुए भी शिथिल प्रयत्न, अधूरे मन से काम में लगने वाले, असफल हों तो इसमें किसी का क्या दोष?

कई लोग बड़े-बड़े काम करना चाहते हैं। बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाते हैं, भविष्य का महान नक्शा खींचते हैं, किंतु उसके लिए उतना प्रयत्न नहीं करना चाहते। जितनी शक्ति और प्रयत्न की आवश्यकता होती है उतना नहीं लगाते। फलस्वरूप उन्हें पूर्ण सफलता भी प्राप्त नहीं होती।

अर्थो वा मित्रवर्गो वा ऐश्वर्यं वा कुलान्वितम्।
श्रीश्चापि दुर्लभा भोक्तुं तथैवाकृतकर्मभिः॥

स्मरण रहे, जितना हम पुरुषार्थ करेंगे उतनी ही सफलता के हम भागीदार होंगे। जितना गुड़ डाला जाता है उतनी मिठास बढ़ती जाती है। सिंह जब अपने शिकार पर झपटता है तो पहले धनुष की तरह पीछे की ओर तनता है और फिर संपूर्ण वेग में उछल जाता है। हम किसी भी काम में जितना जोर मारेंगे उतनी ही हमारी गति तीव्र होगी। जो लोग अपने काम में पूरी शक्ति का उपयोग नहीं करते, पूर्ण पुरुषार्थ नहीं करते, वे प्रायः असफल ही होते हैं।

कई बार लोग उपयुक्त अवसर तथा बाहरी सहायता की ताक में बैठे रहते हैं। लेकिन ऐसे लोगों के लिए न तो उपयुक्त अवसर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही आता है और न किसी की सहायता ही मिलती है। जो अपनी शक्ति का उपयोग नहीं करता, स्वयं पुरुषार्थ नहीं करता, उसकी सहायता कौन करेगा? न इस तरह की मनोवृत्ति से सफलता ही मिलती है। सफलता तो प्रयत्नशील व्यक्तियों को ही मिलती है। नीतिकार ने कहा है—

उद्यमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।

उद्यम अर्थात पुरुषार्थ से ही संपूर्ण कार्य सफल होते हैं, मनोरथों से नहीं। किसी काम के बारे में कल्पना कर लेना ही पर्याप्त नहीं होता, उसके लिए पूरी मेहनत करनी पड़ती है। ऐसे लोग जो अपने भाग्य या अवसर की प्रतीक्षा में बैठे रहते हैं, वे असफलता की तैयारी और अपनी शक्तियों को कुंठित कर देने के सिवाय कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाते। यदि अपवादस्वरूप किसी को कुछ सफलता प्राप्त हो भी जाए तो वह टिकाऊ नहीं होती और यह भी निश्चित है कि जिन्हें स्वयं कुछ करने का विश्वास नहीं, उन्हें सहायता के कितने ही अवसर आएँ, वे उनसे लाभ नहीं उठा सकते। सफलता प्राप्त करने वाले दूसरे ही होते हैं, जो अपने साहस और पुरुषार्थ का सहारा लेकर चलते हैं। वे किसी का मुँह नहीं ताकते, भाग्य की कृपा या अवसर की प्रतीक्षा में नहीं बैठते। जो काम हाथ में लेते हैं उसे प्राणपण से पूरा करने में जुट जाते हैं। चाहे कितनी ही बाधाएँ उनके मार्ग में आएँ, वे आगे बढ़ते ही जाते हैं। बहानेबाजी आलसियों का अवलंबन है। जो काम करने से जी चुराते हैं, वे भाग्य और अवसर तथा किसी के सहारे की आशा लगाए बैठे रहते हैं।

पुरुषार्थ ही जीवन है। इसका अभाव ही मृत्यु है। पुरुषार्थहीन व्यक्ति जीवित रहते हुए भी मरे के ही समान होता है—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विपदोऽभिभवन्त्यविक्रमं रहयत्यापदुपेतमायतिः।
नियता लघुता निरायतेरगरीयान्न पदं नृपश्रियः॥

—सु० भां० १५८/३९२

पुरुषार्थहीन व्यक्ति को विपत्तियाँ आक्रांत कर लेती हैं और विपत्तियों से ग्रस्त होने पर उसकी भावी उन्नति रुक जाती है, जिससे उसका गौरव नष्ट हो जाता है। गौरव नष्ट होने पर राज्यश्री के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता जिसका वह आश्रय ले सके।

वस्तुतः विपत्तियों से घिरे हुए आश्रयहीन साथ ही पुरुषार्थहीन व्यक्तियों के लिए जीते हुए भी मरण का सा दुःख सहना पड़ता है।

अकसर लोग गलत चिंतन और अकर्मण्यता के कारण भाग्य के भरोसे बैठे रहते हैं, उसकी मनौतियाँ करते रहते हैं, किंतु भाग्य की अपनी कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं है। न भाग्य मनुष्य को परवश पशु की तरह ही हाँकता है। हमारा पूर्व पुरुषार्थ ही आज का भाग्य बनकर आता है और आज का पुरुषार्थ भाग्य रेखाएँ खींचता है।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारा सत्संकल्प

- ✧ हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।
- ✧ शरीर को भगवान का मंदिर समझकर आत्मसंयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।
- ✧ मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।
- ✧ इंद्रियसंयम, अर्थसंयम, समयसंयम और विचारसंयम का सतत अभ्यास करेंगे।
- ✧ अपने आपको समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।
- ✧ मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।
- ✧ समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।
- ✧ चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।
- ✧ अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।
- ✧ मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।
- ✧ दूसरों के साथ वह व्यवहार नहीं करेंगे, जो हमें अपने लिए पसंद नहीं।
- ✧ नर-नारी के प्रति परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।
- ✧ संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।
- ✧ परंपराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।
- ✧ सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।
- ✧ राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रांत, संप्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।
- ✧ मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है—इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनाएँगे, तो युग अवश्य बदलेगा।
- ✧ 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा', 'हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा' इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

❐❐

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org